मैथिली

(अनिवार्य)

समय : तीन घण्टा	पूर्णांक : 300

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखितमेसँ कोनो **एक** विषयपर *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) भारतमे स्वास्थ्य सेवा सभक स्थिति

(b) भारतीय कृषक कानून, 2020क सार्थकता

(c) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020क चुनौती सभ

(d) वर्त्तमान समयमे कृत्रिम बुद्धि (AI)क उपयोगिता

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू आ ओहि आधार पर निम्नस्थ प्रश्न सभक उत्तर सही एवं संक्षिप्त भाषामे दिअ : 12×5=60

जीवन आओर पर्यावरण एक दोसरासँ गहींर रूपमा जुड़ल अछि। समस्त जीवधारीक जीवन पर्यावरण पर निर्भर करैत अछि। तेँ हमर सभक तन ओ मोनक रचना, शक्ति, सामर्थ्य आओर अद्वितीय विशेषता सभ पर्यावरण द्वारा बनल, विकसित एवं कायम रखैल जाइत अछि। फलतः जीवन आओर पर्यावरण एतेक घनिष्ठ रूपसँ जुड़ल अछि कि दुनूक सह-अस्तित्व आवश्यक अछि।

पर्यावरण हमर रक्षा-कवच अछि जे प्रकृतिसँ हमरा सभक सभके उपहारक रूपमे भेटल अछि, ई पालनहार आओर जीवनाधार अछि।

पर्यावरण मूलतः प्रकृतिक देन थिक। ई भूमि, वन-पहाड़, नदी-झरना, मरुस्थल-मैदान घास, उपत्यका, रंग-विरंगक पशु-पक्षी, निर्मल जलसँ लहलहाइत झील आओर सरोवर सभसँ भरल अछि। एहि पर बहैत शीतल मन्द सुगन्धित बसात आ उमड़ैत ओ अमृतधार बरसबैत मेघ प्रकृतिक अंग अछि। ई सभ धरा पर बरसबयबला मानवलोकनिक विकास आओर सुख-समृद्धिक लेल एक सन्तुलित पर्यावरणक निर्माण करैत अछि। परञ्च पर्यावरणक ई प्राकृतिक सन्तुलन बहुत तीव्र गतिसँ बिगड़ल जा रहल अछि। आश्चर्य होइत अछि जे मानव धरतीक एहि स्रोत सभकेँ कतेक निर्मम भऽ कऽ दोहन ओ नष्ट-भ्रष्ट करैत जा रहल अछि, ओ लोकनि एहि वरदानकेँ एहि प्रकारेँ अविवेकपूर्ण ढंगसँ दुरुपयोग कयने जा रहल छथि कि सम्पूर्ण प्रकृति-तन्त्र गड़बड़ा गेल अछि। आब ओ दिन दूर नहि लगैत अछि जे धरती पर सैकड़ो वर्षक पुरनका हिमयुग घूमि आबय किंबा ध्रुव पर जमल बर्फक मोटका परत पिघलि जयबासँ समुद्रक प्रलयकारी लहरि नगरक नगर, वन-पर्वत आओर जीव-जन्तु सभकेँ गीरि जाय।

निश्चये पर्यावरणकेँ विकृत आओर दूषित करयवाली समस्त विपत्ति हम सभ अपनेसँ नोत दय आमन्त्रित कयलहुँ अछि। हम सभ स्वयं प्रकृतिक सन्तुलनकेँ बिगाड़ि रहलहुँ अछि। एही असंतुलनसँ भूमि, वायु, पानि आओर ध्वनिक प्रदूषण उत्पन्न होइत अछि। पर्यावरण प्रदूषणसँ फेंफड़ाक रोग, हृदय आओर पेटक बिमारी, दृश्य आओर श्रव्यबाधित, मानसिक तनाव एवं अन्य तनाव-सम्बन्धित बिमारी सभ होइत अछि। हम सभ जानैत छी जे धरती पर जन-जीवन प्रकृति सन्तुलनहिसँ संभव भऽ सकैत अछि। धरती वनस्पति सभसँ ढकि नहि जाय, एहि लेल घास खायवला जानवर पर्याप्त संख्यामे छल। एहि घास खायवला जानवर सभक संख्याकेँ सन्तुलित एवं सीमित रखबाक लेल हिंसक जन्तु सभ सेहो छल। एहि तीनूक अनुपात सन्तुलित ओ नियन्त्रित छल। आधुनिक युगमे वैज्ञानिक आविष्कार आओर उद्योग-धंधा सभक विस्तृत विकासक संग-संग जनसंख्या सेहो भयावह विस्फोट भेल अछि।

(a) एहि कथनक आशय स्पष्ट करू जे "जीवन आ पर्यावरण एक दोसरासँ गहींर रूपमा जुड़ल अछि"।

(b) पर्यावरण आओर प्रकृतिक की सम्बन्ध मानल गेल अछि?

(c) सन्तुलित प्रकृति पर्यावरणक निर्माण कोना करैत अछि?

(d) पर्यावरण असन्तुलनसँ हमर जीवनमे की सभ हानि भऽ रहल अछि?

(e) पर्यावरणक प्रदूषणसँ हमर जीवनमे कोन-कोन बिमारी सभ उत्पन्न भऽ रहल अछि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दमे लिखू। एकर शीर्षक लिखबाक प्रयोजन नहि अछि। सारांश अपनहि शब्दमे लिखू : 60

भारतक एकता आओर स्वतन्त्रता एकहि स्वरूपक दू गोट पहलू थिक। जँ हमर सभक एकता हाथसँ निकलैत अछि तँ स्वतन्त्रता सेहो स्वयं बिनु प्रयासहि बाहर निकलि जायत। एहि लेल सम्पूर्ण भारतवासी लोकनिक पहिल कर्त्तव्य ई थिक जे सम्पूर्ण निष्ठासँ अपन राष्ट्रीय एकताक रक्षा करथि। भारतमे राष्ट्रीय मुद्दा सभ भाषाई मुद्दा सभसँ अधिक अछि। एकताक रक्षाक लेल जँ हमरा अपमानोकेँ सहन करय पड़य तँ हमरा सभकेँ ओकरा सहन कय लेबाक चाही। एकताक रक्षाक लेल जँ हमरा अन्याय सहन करय पड़य तँ हम अन्यायकेँ सेहो सहन करब। ई सभ एहि लेल सहन करब कि भारतक एकता जखन पुष्ट आ शक्तिशाली भऽ जायत, तखन हमर अपमान कियो नहि कऽ पाओत। तखन देशक एक भाग कोनहुँ दोसर भागक संग अन्याय करब सेहो बिसरि जायत। आइ हमर आर्थिक स्थिति मजगूत अछि तँ हमर झगड़ा सेहो समाप्त होयत। जँ ओ रहितहुँ अछि तँ ओहिमे पहिने जकाँ कटुता नहि रहि जायत कियैक तँ समृद्धि व्यक्तिक सोचकेँ प्रभावित करैत अछि।

एकताक रक्षाक संग-संग हमर दोसर कर्त्तव्य इहो अछि जे हम भारतक ओहि रूपकेँ सुधारबाक प्रयास करी जकरा साकार करबाक लेल ओ स्वाधीन भेल अछि। भारतक आजादीकेँ प्राप्त भेना 73 (तिहत्तरि) वर्ष भऽ चुकल अछि, मुदा एखन हमरा आओरो नव-नव शिखरकेँ प्राप्त करबाक अछि। स्वाधीनता मात्र रोटीक पर्याय नहि थिक। स्वाधीनता मात्र कारखाना सबहक स्थापना करबाक योग्यता नहि थिक। स्वाधीनताक वास्तविक अर्थ आत्माक ओ स्वतन्त्रता, मानसक ओ मुक्ति थिक, जकरा कारण राष्ट्र अपन व्यक्तित्वकेँ पूर्ण रूपसँ अभिव्यक्त करैत अछि। जँ कोनहुँ व्यक्ति भूखल अछि तँ ओकरा समक्ष दर्शन पर भाषण देब व्यर्थ थिक।

भारत कोनो नव देश नहि अछि। जाहि भाषामे ओकर संस्कृतिक विकास भेल, ओ संसारक सबसँ प्राचीन भाषा अछि, जे ग्रन्थ भारतीय सभ्यताक आदि ग्रन्थ मानल जाइत अछि, वयह सम्पूर्ण मानवताक सेहो प्राचीनतम ग्रन्थ अछि। अनेक विदेशी आक्रमण सभक बाद सेहो भारत अपन संस्कृतिसँ मुँह मोड़बाक लेल तैयार नहि भेल। नवीन औद्योगिक तथा वैज्ञानिक सभ्यता सेहो भारतसँ ओकर अतीतक प्रेमकेँ नहि छीनि सकत। सत्य मात्र वयह नहि थिक जे पछिला अढ़ाई सय वर्षसँ हमरा सोझाँ राखल गेल अछि अपितु ओहि ज्ञानक सेहो बहुत बेसी अंश सत्य अछि, जकर विकास पछिला छः हजार वर्षमे भेल अछि। भारतकेँ ओ नवीन सत्य सेहो चाही जे भौतिक समृद्धिकेँ संभव बनबैत अछि आओर प्राचीन कालक ओ सत्य सेहो चाही। भौतिक समृद्धिक लेल आत्माक हननकेँ पाप बुझल जाइत अछि।

जखनसँ विज्ञानक उदय भेल संसारक अधिकांश देश सभमे आइ अतीत पराजित आओर वर्त्तमान विजयी भेल अछि। मात्र भारतटा एहन देश अछि जतय अतीत आइयो संग्राम कय रहल अछि। ई संग्राम भारतमे बहुत दिनसँ चलि रहल अछि। मुदा भारतक अतीत आइधरि नहि तँ दुर्बल अछि आ ने अप्रासंगिक। भारतक अतीत सतत वर्त्तमानकेँ संग लऽ कऽ भविष्य दिस अग्रसर होयबाक लेल प्रसिद्ध रहल अछि। आइयो ओ अपन पथ पर अडिग अछि। रामकृष्ण आओर विवेकानन्द, तिलक आ अरविन्द ई सभ महापुरुषलोकनि अतीतक पक्षधर छलाह। ओ लोकनि वर्त्तमानकेँ समेटिकय भविष्यक दिस बढ़बाक शिक्षा दऽ गेलाह अछि। महात्मा गाँधी सबसँ पहिने अतीतक आवाज छलाह। आचार्य विनोबा भावे सेहो अतीतक चश्मासँ वर्त्तमान आओर भविष्यकेँ देखि रहल छलाह। रवीन्द्रनाथ टैगोर सेहो नवीन होइतहुँ प्राचीनताक सबसँ प्रबल ओ पैघ समर्थक छलाह। आइयो धरि हम सभ अतीतकेँ नहि छोड़लहुँ अछि। अतीत हमर सबसँ पैघ धरोहर थिक।

4. निम्नलिखित गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

ई जीवनक सत्य थिक जे जँ चलैत काल अहाँ सचेत भऽ कऽ नहि चलब तँ अहाँक पैर थाल-कादो किंबा खाधिमे जा सकैत अछि। इयह सत्य विज्ञानक बढ़ैत क्रमक संग सेहो चरितार्थ होइत अछि। जँ हम ओकर प्रयोग मानव कल्याण आओर विकासक लेल करैत छी तँ विज्ञान वरदान बनि जाइत अछि। ओकर उपादेयताकेँ कियो नकारि नहि सकैत अछि। परञ्च जँ ओकर उपयोग विध्वंसकारी कार्य सभक लेल होइत अछि तँ ओ विनाशक कारण बनि जाइत अछि आ अभिशाप रूपमे सिद्ध होइत अछि। एहि विध्वंसकारी रूपक कारणहि विज्ञानसँ हमरा जे भौतिक सुख-सुविधा सभ भेटैत अछि ओ हमरा मानसिक सुख एवं शान्ति प्रदान करबामे असमर्थ सिद्ध भऽ रहल अछि। भौतिक प्रगतिक संग मानव-जीवन अत्यन्त व्यस्त, व्यावसायिक आओर भौतिकतावादी होइत गेल अछि। फलस्वरूप विज्ञान आओर ओकर उपलब्धि सभसँ मानवकेँ आत्मिक सुख शान्तिसँ वंचित कऽ देल गेल अछि। नैतिक मूल्य सभक आओर मानवीय सम्बन्ध सभक दिनानुदिन ह्रास भेल अछि। मुदा एहिमे दोष मानवक अछि, जे एकर दुरुपयोगसँ स्वयंकेँ भीषण संकटमे दऽ देलक अछि। बड़का-बड़का संहारक अस्त्र एकर प्रमाण थिक।

जँ मानव अपन व्यक्तिगत स्वार्थ सभकेँ छोड़िकय जनहितक विचारसँ विज्ञानक बढ़ैत चरण सभक उपयोग करथि तँ अवश्येटा ई चरण मानवक प्रगतिक लेल मंगलमय सिद्ध होयत।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

One of India's greatest musicians was M. S. Subbulakshmi, affectionately known to most people as 'MS'. Her singing brought joy to millions of people not only in all parts of our country, but in other countries around the world as well. In October 1966, MS was invited to sing in the great hall of the General Assembly of the United Nations in New York, while representatives of all the member countries listened. This was one of the greatest honours ever given to any musician. For several hours MS kept that international audience spellbound with the beauty of her voice and

her style of singing; when the concert was over, the entire audience stood up and clapped as a sign of their appreciation of not only the singer but of the great music that she had carried with her from an ancient land. India could not have had a better ambassador. MS was the first musician ever to be awarded the 'Bharat Ratna', India's highest civilian honour. She was the first Indian musician to receive the Ramon Magsaysay Award in 1974 with the citation reading "exacting purists acknowledge Shrimati M. S. Subbulakshmi as the leading exponent of classical and semi-classical songs in the Carnatic tradition of South India".

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) शाश्वत

(ii) प्रलय

(iii) श्रीगणेश

(iv) यथार्थ

(v) चेतन

(b) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) मोक्ष चाहयबला

(ii) जकरा पेटमे बात नहि अरघय

(iii) जे आत्मासँ सम्बन्धित हो

(iv) ननदिकं बेटा

(v) जे सूर्यकेँ कहियो नहि देखलक

(c) निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू : 2×5=10

(i) सुरसरि

(ii) वसंत

(iii) सरस्वती

(iv) आदित्य

(v) चक्रपाणि

(*d*) निम्नलिखित शब्द-युग्मक भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(*i*) संस्कृत-संस्कृति

(*ii*) प्रसाद-प्रासाद

(*iii*) हरियर-हरिहर

(*iv*) अपेक्षा-उपेक्षा

(*v*) अभिहित-अविहित

★★★